राम नवमी के यज्ञ की विधि

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ सं.
	III–राम नवमी के यज्ञ की विधि	59 से 67
33.	प्रथम दिवस का प्रोग्राम	61
34.	द्वितीय दिवस का प्रोग्राम	63
35.	तृतीय दिवस का प्रोग्राम	64
36	चतुर्थ दिवस का प्रोग्राम	66
37	षष्ठ दिवस का प्रोग्राम	67
38	सप्तम दिवस का प्रोग्राम	67

राम नवमी के यज्ञ की विधि

साडा है सजन राम, राम हे कुल जहान।
जय महाबीर जी की, जय रघुवीर जी की।

1. सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी और सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के जन्म का उत्सव प्रतिवर्ष चैत्र माह के छटे नवरात्रे को आरम्भ होता है और इसकी समाप्ति रामनवमी के दिन होती है। यह उत्सव चार दिन चलता है और इस उत्सव पर सब सत्संगी सजन शामिल होते हैं।

2. चौथे नवरात्रे को सतवस्तु के कुदरती ग्रंथ की सवारी आती है। पांचवें नवरात्रे को सायंकाल रथ यात्रा का जलूस निकाला जाता है।

प्रथम दिवस

3. प्रातः आठ बजे यज्ञ उत्सव आरम्भ होता है। प्रार्थना, चरण शरण और पांच नारे बोलकर सवारी आरम्भ होती है। ''चलो चलिए सजन महाबीर जी दे पास दासियां रल चलिए.........'' बोलते हुए हिन्दी की रामायण, पंजाबी रामायण, सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सजन श्री शहनशाह महाबीर जी का सिंहासन और चर्खा उठाया जाता है। इनके पीछे चंवर झुलाया जाता है। जय सीता राम, जय सीता राम, जय सीता राम बोलते हुए हिन्दी रामायण, पंजाबी रामायण, सतवस्तु के कुदरती ग्रंथ को स्टेज पर प्रकाशित किया जाता है। महाबीर जी का सिंहासन अपने स्थान पर विराजमान किया जाता है। स्टेज के एक ओर चर्खा रखकर सूत काता जाता है और दूसरी और जोत को प्रकाशित किया जाता है। रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीता राम बोलते हुए सब सजन अपना स्थान लेकर बैठ जाते है। जो सजन ग्रन्थों को लाते हैं वे सजन स्टेज पर ग्रन्थों के पीछे बैठ जाते हैं।

4. महाबीर जी का सिंहासन लाने वाला सजन चंवर लेकर सिंहासन के पास खड़ा हो जाता है और चंवर झुलाता है।

5. स्टेज की दाईं ओर दो सजन बैठते है। एक सजन मन में नाम (जो भी उसने लिया हुआ है) चलाना शुरु करता है और दूसरा सजन मन में हनुमान चालीसा पढ़ना शुरु कर देता है।

6. स्टेज की बाईं ओर दो सजन बैठते हैं। एक सजन मन में सिमरन करना शुरु करता है और दूसरा सजन मन में हनुमान चालीसा पढ़ना शुरु करता है।

7. रामायण पढ़ने वाले, चर्खा चलाने वाले, चालीसा पढ़ने वाले, सिमरन करने वाले, सिंहासन पर चंवर झुलाने वाले और जोत पर बैठने वाले सजन आद–अन्त से कंचन होते हैं। दो सजनों को नाम ध्यान में रह कर पहरा देना होता है। चंवर झुलाने वाले सजन, चर्खा चलाने वाले सजन और जोत पर बैठने वाले सजन हर वक्त मन में अक्षर चलाते हैं।

8. **स्टेज पर कार्यक्रम इस प्रकार शुरु होता है**

(i) "साडा है सजन राम, राम है कुल जहान" (7 बार बोलना)।
(ii) "सब गौरी नन्द गणेश, प्रथम प्रणाम करो" का कीर्तन बोलना।
(iii) दण्डोत वन्दना..............बोलना।
(iv) स्वागतम् गान "आओ आओ मेरे साजन प्यारिया.......... "या किसी और कीर्तन का बोलना।
(v) प्रार्थना
(vi) हनुमान चालीसा, संकट मोचन, पंच कवित्त का पढ़ना।
(vii) "पकड़ां महाबीर दे चरण, लगे राम लगन........ "की ध्वनि बोलना।
(viii) "सजन श्री शहनशाह हनुमान जी महाराज सच्चे पातशाह जी" दो बार बोलकर सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ और रामायणों का पाठ आरम्भ होता है। पंजाबी की रामायण बीच में से पढ़ी जाती है और हिन्दी रामायण अर्थों सहित पढ़ी जाती है।

9. रामायण वाले कमरे में दो सजन ड्यूटी पर होते हैं। उनके पास इस कमरे में ड्यूटी देने वाले सब सजनों की सूची होती है। यह दो सजन एक–एक घण्टे बाद सब सजनों की ड्यूटियाँ बदलते रहते हैं जोत के आगे बैठने वाले सजन सावधान होकर ख़जाना भी सम्भालते हैं, साथ में जो प्रशाद का चढ़ावा चढ़ाया जाता है उसको भी सम्भालते हैं।

10. सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ और रामायणों का पाठ आरम्भ करने के कुछ समय बाद सात सजन दोनों आरतियाँ (आरती सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की और आरती श्री रघुवंश मणि जी की) करते हैं। एक आठवाँ सजन सच्चे पातशाह श्री साजन जी के आगे जाकर आरती करता है। आरती प्रातः और सायं दोनों समय होती है।

11. एक सजन सभा में तिलक लगाता है। यह तिलक लगाने वाला सजन महाराज जी की बिछाई और श्री महाबीर जी के सिंहासन पर फूलों की सजावट भी करता है। यह सजन अपनी ड्यूटी हर रोज देता है और यह क्रम यज्ञ की समाप्ति तक चलता है।

12. प्रातः दस बजे ग्रंथ की सवारी सात दरवाजे (जो कि पंडाल में बने होते है) लांघ के वहां सत्संग कीर्तन के लिए जाती है। सवारी ले जाने से पहले प्रार्थना, चरण शरण व पांच नारे बोल कर सवारी उठाई जाती है। ''चलो चलिये सजन महाबीर जी दे पास, दासियां रल चलिये......... ''वाला कीर्तन बोलते हुए सब सजन सवारी की चरण धूल लेते हुए पंडाल में कीर्तन के लिये जाते हैं। वहां पर कीर्तन एक बजे तक होता है।

13. इस प्रकार रात को नौ बजे ग्रंथ की सवारी फिर पंडाल में जाती है और कीर्तन होता है। यह कीर्तन रात के एक बजे तक चलता है।

14. सायंकाल चार बजे उस कमरे में जहाँ सच्चे पातशाह विराजमान होते हैं कीर्तन और ग्रंथ का पढ़ना आदि कार्यवाही होती है। यह क्रम यज्ञ की समाप्ति तक चलता है।

द्वितीय दिवस

15. प्रातः आठ बजे पंजाबी की रामायण का पाठ विधिपूर्वक आरम्भ होता है।

16. स्टेज पर कार्यक्रम इस प्रकार शुरु होता है–

    (i) ''साडा है सजन राम, राम है कुल जहान'' सात बार बोलना।
    (ii) स्वागत गान बोलने ''श्री रामचन्द्र जी दियां हकलां देखो कैसियां ही ओ आवन जी...''तथा'आओ आओ मेरे साजन प्यारिया...''
    (iii) प्रार्थना
    (iv) हनुमान चालीसा, संकट मोचन, पंच कवित्त का पढ़ना।
    (v) ''पकड़ां महाबीर दे चरण, लगे राम लगन...'' की ध्वनि बोलनी।
    (vi) ''सजन श्री शहनशाह हनुमान जी महाराज सच्चे पातशाह जी'' दो बार बोल कर पंजाबी की रामायण का पाठ आरम्भ किया जाता है।

17. बाकी का कार्य रामायण के कमरे में, पंडाल में और सच्चे पातशाह श्री साजन जी के कमरे में पहले दिन की तरह चलता है। रात को बाहर पंडाल में कीर्तन की समाप्ति दो बजे होती है।

तृतीय दिवस

18. सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के जन्म दिन (अष्टमी) पर प्रातः आठ बजे ग्रंथ की सवारी पहले दिन की तरह पंडाल कीर्तन के लिये जाती है। सवारी ले जाने से पहले प्रार्थना, चरण शरण व पांच नारे बोलकर सवारी उठाई जाती है। ''चलो चलिये सजन महाबीर जी दे पास, दासियां रल चलिये......'' वाला कीर्तन बोलते हुए सब सजन सवारी की चरण धूल लेते हुये पंडाल में कीर्तन के लिए जाते हैं।

19. अन्दर नौ बजे हवन आरम्भ होता है। यह हवन पंडाल में श्री हनुमान चालीसा, संकट मोचन और पंच कवित्त बोलने के बाद आरम्भ होता है। हवन वाली जगह पर सिंहासन सजाया जाता है।

20. हवन की विधि इस प्रकार है–

(i) हवन करने वाले सात निश्चित सजन जो आद अन्त से कंचन होते है, हवन कुंड के इर्द–गिर्द बैठते हैं। एक सजन के आगे घी व हवन वाले सात नारियल आहुति देने के लिये होते हैं। बाकी छह सजनों के आगे थाली में सामग्री आहुतियाँ डालने के लिए होती हैं।

(ii) एक आठवां सजन माईक के आगे बैठता है और हवन की पूरी विधि को बोलता है और बाकी सात सजन उसकी आवाज के साथ विधि पूवर्क हवन करते हैं।

(iii) सबसे पहले ये सजन प्रार्थना करते हैं। फिर ''साडा है सजन राम, राम है कुल जहान'' सात बार बोलते हैं और ''नी मैं धो के पीवां हनुमान जी दे चरण........'' वाला कीर्तन बोलते हैं।

(iv) वह सजन जिसके आगे घी और नारियल पड़े होते हैं, वह हवन कुंड में आम की लकड़ी के साथ अग्नि प्रज्ज्वलित करता है और यह ध्यान रखते हुए कि अग्नि प्रज्ज्वलित रहे, लकड़ियां डालता जाता है।

21 **आहुतियां**

(i) **सात आहुतियां–सुहंग पवन नन्दनाये नमः। ओ३म् स्वाहा की** डालते हैं।

(ii) **सात आहुतियां–श्री हनुमान चालीसा पूरा बोलकर ओ३म् स्वाहा** के साथ डालते हैं।

(iii) **सात आहुतियां–गायत्री मंत्र बोलकर ओ३म् स्वाहा** की डालते हैं।

(iv) जिस सजन के आगे नारियल पड़े होते हैं, वह सजन हर एक "हनुमान चालीसा" बोलने के बाद "ओ३म् स्वाहा" की आहुति के साथ एक नारियल हवनकुंड में डालता है।

(v) शान्ति पाठ सातों सजन बोलेंगे।

(vi) उसी जगह बैठकर सात सजन बारी–बारी से लोटे में लस्सी लेकर हवन कुंड का दायीं तरफ का चक्कर लगाकर, मन में शब्द चलाते हुए लस्सी को जमीन पर डालते एक फेरा लेते हैं।

फिर यह सजन अपनी जगह बैठकर "मैं नहीं आहुति रघुवर जी ने पाई..." की धुन्नि बोलते हैं।

22. हवन के बाद में यह सजन रामायण वाले कमरे में दोनों आरतियां करते हैं। एक सजन सच्चे पातशाह जी के कमरे में आरती करेगा।

23. रामायण वाले कमरे में 12 बजे हिन्दी रामायण व सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ का भोग डाला जाता है फिर दोबारा हिन्दी रामायण व सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ का पाठ दो बार "धन मेरे सजन श्री शाहनशाह हनुमान जी महाराज सच्चे पातशाह जी" बोलकर आरम्भ होता है। हिन्दी रामायण की केवल दोहा, चौपाइयां पढ़ी जाती हैं।

24. सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के जन्म की बधाई बोलकर एक सौ एक (101) कंजक पूजी जाती है। यह 101 छोटी कंवारी लड़कियाँ होती है। सात कंजकों के पैर धोकर उनको तिलक लगाया जाता है। फिर उनको कंजक दी जाती है (कंजक देसी घी का हलवा, पूड़ी खीर और दक्षिणा) फिर बाकी 94

कंजकों को कंजक दी जाती है। कंजक के प्रशाद को देने से पहले एक सजन विधिपूर्वक भोग लगवाता है।

25. बाहर पंडाल में 12 बजे से पहले कीर्तन समाप्त कर दिया जाता है ताकि सजन अन्दर रामायण वाले कमरे में आकर बैठ जावें।

26. सायंकाल की कारवाई पहले दो दिनों की तरह चलती है। रात को बाहर पंडाल में कीर्तन की समाप्ति तीन (3) बजे होती है। रात के कीर्तन में सब सजन गुलानारी रंग के दुपट्टे और स्त्री सजन सफ़ेद वर्दी पहनते हैं। पगड़ियां बाँधकर ''कलुकाल जब हटने लगा तो वह दिन आने वाला.......'' वाला कीर्तन बोलते हैं।

चतुर्थ दिवस

27. सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी महाराज के जन्म दिन (राम नवमी) पर पहले सवेरे आठ (8) बजे ग्रंथ की सवारी पहले दिन की तरह बाहर पंडाल में सत्संग कीर्तन के लिए जाती है। सवारी ले जाने से पहले प्रार्थना, चरण शरण व पांच नारे बोलकर सवारी उठाई जाती है। ''चलो चलिये सजन महाबीर जी दे पास, दासियां रल चलिये,.....'' वाला कीर्तन बोलते हुए सब सजन सवारी की चरण धूल लेते हुए पंडाल में कीर्तन के लिए जाते हैं।

28. पंडाल में श्री हनुमान चालीसा, संकट मोचन और पंच कवित्त बोलने के बाद अन्दर नौ बजे हवन तृतीय दिन की तरह विधिपूर्वक होता है।

29. अन्दर रामायण वाले कमरे में पहले दिनों की तरह रामायण और सतवस्तु के कुदरती ग्रंथ का पाठ चलता रहता है।

30. पंडाल में 12 बजे कीर्तन की समाप्ति की जाती है परन्तु सतवस्तु के कुदरती ग्रंथ का प्रकाश उसी तरह बना रहता है।

31. अन्दर सतवस्तु के कुदरती ग्रंथ, हिन्दी व पंजाबी रामायणों का भोग दोपहर एक बजे डाला जाता है।

32. तृतीय दिवस की तरह एक सौ एक (101) कंजक पूजी जाती हैं।

33. जिन्होने बच्चों के मुण्डन इत्यादि कराने होते हैं, वे भोग पड़ने के बाद मुण्डन

कराते हैं फिर वे सजन अथवा जिन्होंने बच्चों को चोले पहनाने होते हैं या मत्था टेकना होता है तो वे पंडाल में लाईन लगाकर बारी बारी से सतवस्तु के कुदरती ग्रंथ के आगे यह कार्य करते हैं।

34. सायंकाल का कीर्तन इत्यादि सच्चे पातशाह श्री साजन जी के कमरे में पहले दिनों की तरह चलता है।

35. बाहर पंडाल में रात का कीर्तन नौ बजे शुरु होता है और इसका भोग सुबह चार (4) बजे डाला जाता है। रात के कीर्तन में सब सजन गुलानारी रंग के दुपट्टे और स्त्री सजन सफेद वर्दी में शमिल होते हैं। कीर्तन के दौरान पगड़ियां बांधकर ''कलुकाल जब हटने लगा तो वह दिन आने वाला........'' कीर्तन बोलना है। इस प्रकार यज्ञ की समाप्ति होती है और सब सजन विदा होते हैं।

षष्टम् दिवस

36. एक दिन छोड़कर षष्टम् दिवस प्रातः दस बजे चैत्र के यज्ञ की मीटिंग होती है।

37 मीटिंग इस प्रकार शुरु होती है

(i) प्रार्थना व चरण शरण।

(ii) ''साडा है सजन राम, राम है कुल जहान'' सात बार बोलना।

(iii) पहली पुस्तक में से एक भजन बोलना।

(iv) श्री हनुमान चालीसा, संकट मोचन, पंच कवित्त का पढ़ना।

(v) सच्चे पातशाह श्री साजन जी के सजनों को दिये पैगाम के कीर्तन बोले जाते हैं।

  (a) सजनों हमारा पैगाम ले लीजिए, एहो पैगाम सजनां नूं सुना दीजिए क्या ? सजन सदो सजन सदावो..............

  (b) हमारा पैगाम ले लीजियो एहो पैगाम सजनां नूं फरमा दीजियो गृहस्थ धर्म को आप ठीक निभा रहे होंगे..........

(vi) सच्चे पातशह जी के अन्य वचनों के साथ मीटिंग की समाप्ति की जाती है।

सप्तम दिवस

38. सवारी की वापसी।